New Man International Journal of Multidisciplinary Studies
(UGC Approved Journal No. 45886)
ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

23.

सुनीता जैन के काव्य में वैचारिकता

डॉ. रेखा गाजरे
सह अध्येता प्राध्यापक एवं
अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
भुसावल कला, विज्ञान एवं पु.ओ.नाहाटा
वाणिज्य, महाविद्यालय, भुसावल

प्रियंका जगदीश महाजन
पीएच. डी. शोधछात्र
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव
अध्ययन केंद्र - पु.ओ.नाहाटा महाविद्यालय
भुसावल (महाराष्ट्र)

समकालीन काव्यधारा में सुनीता जैन कै काव्य की एक अलग पहचान है। समकालीन हिन्दी साहित्य में उन्हें `आधुनिक महादेवी वर्मा` के नाम से संबोध्य किया जाता है। कवयित्री के अनुभव और अनुभूति अधिक विस्तृत एवं सशक्त है। कवयित्री समाज में घटित घटनाओं का सूक्ष्मतिसूक्ष्म चित्रण करने में सक्षम है। समाज में सुख-दुःखात्मक घटनाओं प्रति विचार प्रकट करने के लिए साहित्य का सहारा लिया जाता है। उनके साहित्य का परिपूर्ण परिपाक कविताओं में दिखाई देता है। सुनीता जैन ने काव्य के सम्बन्ध में प्रियंका भारव्दाज लिखती हैं-`` समकालीन कविता भले ही दुःख और गुस्से से निकली हों परन्तु उसकी अन्तिम परिणति अनुभव और अनुभूति में होती है, अमर्ष तथा विमर्ष में नहीं। छोटे अनुभवों में बड़ी बात कहना सुनीता जैन की कविताओं का निजी अधिकार है। यह निजी बोध सौन्दर्यात्मक प्रवाह है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन विसंगतियों की वास्तविकता का पर्दापाश करती ये कविताएँ अपने अन्तिम चरण में मनुष्य को स्वयं से मिलने का विश्वास का कीमती तथा नायाब तोहफ़ा हैं।``[1] कवयित्री के काव्य में निजी अनुभवों को अधिक महत्व दिया है। उन्होंने जिस विषय के सम्बन्ध में कविता लिखी है उसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों का चित्रण किया है। केवल समाज की बुराईयों का चित्रण ही नहीं किया बल्कि अच्छाई को भी संवेदनशीलता से उजागर किया है।

वर्तमान समाज में पारिवारिक विघटन के दृश्य दिखाई देते हैं। समाज की यह धारणा है कि सास-बहू के रिश्तों में कटुता दिखाई देती है। माँ अपने बेटे के घर में सुख और शांति चाहती है। घर में सास और बहू के रहते हुए कभी बेटा खुश नहीं रह सकता। इसका परिणाम घर में माँ और बेटे अलग रहने लगते हैं। बेटे की माँ के प्रति आस्था कम नहीं होती। वह कभी-कभी चुपके से मिलने चला जाता है लेकिन जब भी पत्नी को इस बात का पता चलता है तब बेटे के घर विवाद शुरू हो जाता है। जिस माँ ने जन्म दिया उसी माँ को मिलने के लिए परिवार में कई दिनों तक अनबन चलती रहती है। कवयित्री ऐसे परिवार की परिस्थिति का चित्रण करती है-

जब-जब बेटा माँ से मिलने जाता
उड़ जाता उसकी अपनी ही
गृहस्थी का टाँका
सुनता है फिर कई रोज तक,
बीवी की जब तक ताना।[2]

समाज में लड़कियों की शिक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई देती है। लड़का और लड़कियों में भेद किया जाता है। घर में लड़के के लिए अलग कमरा, शिक्षा के लिए भी उसे सारी सुविधाएँ उपलब्ध की जाती है। लड़कियों के प्रति समाज में धारणा है कि वह पराया धन होती है। उसे पढ़ा लिखाकर पति के घर जाकर बर्तन-चौका ही करना पड़ेगा। अगर उसे घर में काम करना है तो पढ़ाई के अलावा घर के काम सीख ले। ससुराल में शिक्षा नहीं बल्कि घर काम बहुत आवश्यक है। इसलिए लड़कियों को घर काम में व्यस्त रखा जाता है। उसे बात-बात पर टोका जाता है, लड़की होने का अहसास कराया जाता है। कवयित्री समाज में लड़कियों पर हो रहे अन्याय, अत्याचार के सम्बन्ध में लिखती है-

अरी किताब चींटी
जाना है कल तुझे टापरे,
कुछ गृहस्थी के ढंग सीख ले
काम नहीं आती लड़की के, सुन ले
सिर्फ पढ़ाई..... [3]

सुनीता जैन की कविताओं में नौकरी करनेवाली स्त्रियों का चित्रण मिलता है। वर्तमान युग में स्त्री का रूप बदल रहा है । वह पितृसत्ता प्रधान समाज में अपनी अस्मिता को बनाने में सक्षम बन रही हैं। घर की दीवारों से निकल कर बाहर नौकरी करने में सक्षम हैं। वह घर की जबाबदारी का निर्वाह करते हुए नौकरी की जबाबदारी का ध्यान भी रखती है। घर के पुरूष नौकरी करते हुए घर के शेष कामों से मुक्त रहते है लेकिन स्त्री को सारे काम करने ही पड़ते हैं। इस संदर्भ में दिल्ली में नौकरी करनेवाली स्त्रियों का चित्रण यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत है -

दिल्ली की दौड़ती सड़को पर

दौड़ रही थी एक और कामकाजी स्त्री

बिना चूड़ी, बिना बिन्दी

उस स्त्री की, बेहिसाब चिन्ताओं में

यह कहीं दर्ज नहीं था

कि नाश्ते में क्या खाएगा

उसका चौबीस घण्टे पुराना पति [4]

घर में बूढ़े व्यक्तियों को उपेक्षित किया जाता है। जीवनभर वह अपने बच्चों के लिए जीते है लेकिन अंतिम दिनों में बच्चे का माँ-पिता के प्रति उदासीन का भाव दिखाई देता हैं। शहर में रहनेवाले बूढ़ों की व्यथा प्रस्तुत कविता में चित्रित की गई है। वह शाम या सुबह सैर करने के बहाने पार्क में जाते हैं। उनकी विवशता है कि उन्हें अपने बच्चों के घर रहना पड़ता है। उस घर में उनके होने का या न होने से कोई फर्क नहीं होता। घर की आपाधापी की ज़िदगी से बचने के लिए कुछ देर पार्क में दूसरे बूढ़े व्यक्तियों के साथ बैठते है-

वे निकली होंगी सैर के बहाने

या शाम की चाय-पकौड़ी के बाद

कुछ देर चूल्हे की जहमत से बचने

वे तीनों बैठी हैं पार्क की बेंच पर [5]

वृध्दों की मानसिकता यह होती है कि वे अंतिम वक्त दो पल का सहारा चाहते हैं। घर के बच्चों के साथ रहना चाहते हैं। उनके साथ बच्चों-सा जीवन जीना चाहते है। इसी के साथ वह किसी भी प्रकार का धन, दौलत नहीं चाहते हैं। कवयित्री वृध्दों की इसी मानसिकता का सूक्ष्म चित्रांकन करते हुए लिखती है-

बूढ़े नहीं चाहते किसी का पैसा

न ही सेवा, बूढ़े जो चाहते हैं

वह कोई नहीं कहता-

``बाबू जी, हम है न !``

कोई नहीं कहता ``माँ,

उदास मत होना हम हैं न .....``

बूढ़े हैरान है न के कहीं भी, नहीं होने से [6]

कवयित्री का जीवन अधिकतर महानगरों में बीता है। महानगर में व्यक्ति का जीवन भौतिक सुविधाओं से संपन्न है। वह भौतिक सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए निरंतर भागदौड कर रहा है। मशीनों के नगर में व्यक्ति स्वयं मशीन बन गया है। इस तरह कृत्रिमता और यांत्रिकता ने महानगरीय जीवन को और भी कठिन बना दिया है। जनसंख्या की वृध्दि और उससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से

महानगरीय वातावरण कलुषित हो गया है। सम्प्रत्ति जीवन की त्रासदी यह है कि व्यक्ति यहाँ अपने आपको नगण्य महसूस करता है। महानगर में हर व्यक्ति घुटनभरा जीवन व्यतीत कर रहा है। महानगर में भागदौड़ के कारण व्यक्ति की व्यक्ति से बातचित कम हो चुकी है। इस संदर्भ में कवयित्री लिखती है-

आजकल भागदौड़ और कोलाहल में,

शब्दों से / शब्द नहीं

जुड़ पाते

बिखरे रहते हैं

पारा पारा हो / मन में [7]

मनुष्य ने घरों के निर्माण के लिए पेड काटे, पहाडों को समतल बनाया, ईटों के मकान, पक्के रस्ते बनवाएँ, परमाणु भट्टियाँ, विद्युत-गृह, वस्तुओं का निर्माण, उनमें मुख्य है प्लास्टिक का निर्माण आदि बहुत ऐसे उत्पादन है जिससे महानगरों का समूचा जीवन-घातक तत्वों से भर गया है। महानगरों में मनुष्य स्वच्छ वायु में साँस लेने को तरस गया है। वायु प्रदुषण के कारण आँखों में जलन, त्वचा में एलर्जी, डेंगु आदि कितनी प्राणघातक बीमारियाँ फैलती है। कवयित्री पर्यावरण के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करती है कि महानगरों में ध्वनि, वायु प्रदुषण का दमघोटू वातावरण अनुभव हो रहा है-

सारे दिन महसूसा मैंने
एक मरता शहर
एक बेकार फेफड़ा
पहाड़ का चारों ओर डीज़ल
चीखते पहिये कसैला धुआँ
क्या लेने आते हैं हम लोग यहाँ
दौड़-दौड़ अपने घरों से [8]

अत्यंत दरिद्रता से पीड़ित सड़क पर भीख माँगने वाले बच्चों की स्थिति भी चिंतनीय होती है। वे समाज व्दारा उपेक्षित होते है। उनका होने या न होने से समाज पर कोई असर नहीं पड़ता। कवयित्री बरसात के दिनों में भीख माँगने वाली एक लड़की और उसके भाई की दुखद स्थिति के प्रति चिंतित होती है। वह लड़की फिल्मी गीत की धुन पर माधुरी दीक्षित जैसी नाच रही है। उसके साथ अधनंगा भाई भी पानी में भीग रहा है। कवयित्री ने भीख माँगने वाले बच्चों के प्रति समाज की उदासीनता का चित्रण किया है-

भीगती है लड़की

बीचों बीच सड़क

माधुरी दीक्षित सी हिलती

गाती मन में फिल्म धुनों को

और वह अंधनंगा लडका

शायद भाई लड़की का खुजलाता

मक्खी भिनके हाथों से

अपने सिर में जुंओं का छत्ता [9]

सुनीता जैन के काव्य में वैचारिकता के सम्बन्ध में जनार्दन मिश्र लिखती है-``इनकी कविताओं में चूल्हा-चक्की, पशु-पक्षी, नगर-महानगर, नदी झील-झरना, अभिशप्त हो रहे निरीह लोग, त्रासदी यूँ ही नहीं अनायास आया हैं। सच में कहा जाए कि भोगा हुआ यथार्थ इनके काव्य अनुभव में सुखमय जीना, सारे जगत को अपना घर समझना-आपाधापी व जटिल क्रिया-प्रक्रिया एवं प्रतिक्रियाओं के बीच से गुजरने वाली इनकी कविताएँ कहीं से दिग्भ्रमित नहीं होती।`` [10] इस प्रकार कवयित्री ने अपनी कविताओं में समाज में घटित

समस्याओं पर प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है। सुनीता जैन ने अपनी कविताओं में जीवन के कटु प्रसंग, पारिवारिक सम्बन्ध, वृध्दों की मानसिकता, महानगरीय चित्रण आदि कई महत्वपूर्ण विषयों को लेकर अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं।

संदर्भ सूची :-

1) सुनीता जैन समग्र खण्ड -12 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 270
2) सुनीता जैन समग्र खण्ड -7 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 158
3) पूर्ववत पृ.162
4) सुनीता जैन समग्र खण्ड -10 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 56
5) सुनीता जैन समग्र खण्ड -7 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 96
6) सुनीता जैन समग्र खण्ड -9 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ.148
7) सुनीता जैन समग्र खण्ड -5 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 37
8) सुनीता जैन समग्र खण्ड -7 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 180
9) सुनीता जैन समग्र खण्ड -6 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 201
10) सुनीता जैन समग्र खण्ड -5 संपा. पुष्पपाल सिंह पृ. 349

❑❑❑